आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 4/दिसंबर 2022
Received: 21/11/2022; Published: 24/12/2022

पुस्तक समीक्षा

मुक्ता की सृजन भूमि ; समीक्षा

- अनिता सिंह

अनिता सिंह, मुक्ता की सृजन भूमि ; समीक्षा, आखर हिंदी पत्रिका, खंड2/अंक 4/दिसंबर 2022,(340-343)

मुक्ता जी का नाम आते ही जेहन में एक चेहरा सामने आता है ,जो बिना किसी अभिमान के सरल ,सहज स्वभाव वाली बहुमुखी प्रतिभा की धनी व्यक्तिव ,ओज से भरपूर शख्सियत जो सदैव स्त्री शक्ति विमर्श की प्रणेता के रूप जानी जाती है | आपकी रचनाओं में स्त्री पात्र हो या पुरुष पात्र दोनों ही वास्तविक जीवन से लिए हुए है | आपकी लेखनी से स्त्री विमर्श में स्त्री के संदर्भ में कुछ भी छूट जाए,यह होना असंभव है|आप प्रत्येक पीढ़ी के लिए आदर्श रही है |

हिन्दी के साहित्य जगत में मुक्ता जी एक बहुचर्चित शक्ति सम्पन्न लेखिकाओं में से एक मानी जाती है| आपने हिन्दी साहित्य की हर विधाओं में कुछ न कुछ अवश्य लिखा है ,चाहे वह कहानी हो ,नाटक हो या साक्षात्कार हो या अन्य कोई क्षेत्र हो ,सभी पर आपकी लेखनी का जादू सर चढ़ कर बोलता है |आपने साहित्य जगत को इतने सारे बहुमूल्य मोती अर्पित किए है कि हिन्दी साहित्य जगत सदैव आपका ऋणी रहेगा |

भारतीय समाज और साहित्य में पुरुष का वर्चस्व और नारी के तिरस्कार की स्थितियाँ हरदम बनती और वर्णित होती रही है | भारतीय समाज में शोषितों ,दलितों एवं स्त्रियों की स्थिति बदलते परिवेश के बावजूद भी नारकीय जीवन जीने के लिए अभिशप्त है |

इस संसार का सबसे सनातन सत्य यही है कि नर और नारी किसी भी स्वस्थ समाज में संसार रूपी रथ के दो पहिये है |अगर इन दोनों में से किसी एक को भी अलग कर दिया जाए तो संसार रूपी रथ आगे बढ़ नहीं सकता है ,इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों समान स्थान और समान सम्मान के अधिकारी है | परंतु आज भी समाज में

दलित,शोषित और स्त्री समाज से बहिष्कृत है | युग परिवर्तन के साथ-साथ समाज में प्रवर्तित इस अन्याय और असंतुलन के विरोध कि प्रतिक्रियाएँ स्पष्ट होने लगी ,स्वाभाविक रूप से उभरने लगी परिणामतः कालांतर में कुछ महिला कलाकार अपनी लेखनी के माध्यम से नारी के लिए समान अधिकार,न्याय और सम्मान की माँग करने लगी | नारी जीवन के जीवंत एवं मार्मिक पक्षों को अपनी धारदार लेखनी से साकार करने वाली आधुनिक साहित्यकारों में 'मुक्ता जी'का नाम एक सुगंधित पुष्प की भाँति पूरे हिन्दी साहित्य को सुगंधित कर रहा है |

मुक्ता जी की कहानियाँ और उनके जीवंत किरदार हमारे अन्तर्मन में अपनी जगह बनाए हुए है | मुक्ता जी की कहानी संग्रह 'मेरी प्रतिनिधि कहानियाँ 'की एक कहानी'कुसुम कथा'में नारी के स्वाभिमान और पुरुष प्रताड़ना ,अवहेलनाओं को बल ही नही दिया अपितु उसके विद्रोह को भी व्यक्त किया है |

कुसुमा का पति जगदीश उसे बीस साल पहले छोड़कर चला गया था |कुसुमा के जेठ के बेटे के जनेऊ में उसका पति जगदीश भी आता है | आजी पुरोहित से कहती है –"गांठ जोड़कर और यदि पत्नी के जीवित होते हुए पति "

आपने सदैव लीक से हटकर कुछ न कुछ अलग करने का प्रयास किया है ,जिसके फलस्वरूप समाज में एक नई क्रांति,एक नई चेतना,अपने अधिकारों के प्रति सजगता का संचार हुआ|

साहित्य जगत में डॉ॰ धर्मवीर भारती जी की तरह ही डॉ॰मुक्ता जी भी हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं पर अपनी लेखनी का जादू दिखाया है |आपकी लेखनी की सृजन यात्रा 2007 से अनवरत चली आ रही है | आपका कवि हृदय इतना अधिक भावुक है कि पाठक मंत्रमुग्ध सा आपकी रचनाओं में मग्न हो जाता है ,वह अलग ही दुनियाँ में चला जाता है |

मुक्ता जी ने समाज में व्याप्त बुराइयों ,समस्याओं पर चिंता ही नही किया है वरन चिंतन किया है | आपने कई ज्वलंत मुद्दों पर आलेख लिखें है जो चर्चा का विषय रहे है |मुक्ता जी ने अपनी कहानियों के माध्यम से कई सवाल खड़े किए है जो स्त्री अस्मिता को लहूलुहान करते है | पुरुषवादी संकीर्ण मानसिकता के कारण स्त्रियों के स्वाभिमान ,उनकी अभिलाषा को हमेशा ही क्षत –विक्षत किया जाता रहा है | स्त्री हमेशा मिथकों और झूठे आदशों में अपना जीवन कष्टमय करती रही है |मुक्ता जी ने अपनी रचनाओ के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया है कि महिलाओं को यथार्थ के धरातल पर खड़े होकर जीवन की हकीकतों का डटकर सामना करना चाहिए |उसे पुरुष की निर्भरता तब तक स्वीकार नही करना चाहिए जब तक वह स्वयं स्वावलंबी और

आत्मनिर्भर न हो जाए |स्त्री को अपनी अस्मिता की रक्षा स्वयं करनी होगी ,तभी वह पुरुष के मोहपाश से मुक्त हो पाएगी | लोग क्या कहेंगें ?इसकी चिंता छोड़कर खुद के स्वाभिमान की रक्षा को प्राथमिकता देनी होगी |

मुक्ता जी की कहानियों में जीवन की जद्दोजहद ,विषमताएँ ,क्रूर महत्वाकांक्षाओं की अंधी दौड़ में छिन्न –भिन्न होती संवेदना ,भ्रष्टाचार,नेताओं की छल-कपट ,आभिजात्य शहरी जीवन की दिखावटी जिंदगी ,विघटित समाज और जीवन मूल्य ,दलितों पर हो रहे अत्याचार पर विमर्श ,ग्रामीण जीवन की चिंता ,विधवाओं की दयनीय स्थिति ,पुरुष दर्प ,रूढ़िवादी संस्कारों से मुक्ति के लिए छटपटाता जीवन ,मेहनतकश बुनकरों के जीवन का संघर्ष ,विकलांगों का जीवन ,उनकी पीड़ा इत्यादि का चित्रण उनकी कहानियों में है | उनकी कई कहानी संग्रह है जिनमें 'किस करवट'में कुल चौदह कहानियाँ है जिनमें भारतीय परिवारों का तथा समस्याओं का चित्रण है |

मुक्ता जी ने समाज को रूढ़िवादी और परंपरावादी विचारों को तोड़कर नए समाज और नए समय के साथ चलने की एक नयी सोच प्रदान की है |समय परिवर्तनशील होता है वह हमेशा बदने की प्रवृत्ति रखता है अतः हमको भी उसके साथ चलने के लिए कुछ आमूलचूल परिवर्तन करने होंगे ,तभी हम और हमारा समाज आगे बढ़ने में सक्षम हो पाएगा | आपने अपनी पैनी दृष्टि से हर पीड़ित समुदाय का अवलोकन किया , फिर लेखनी से अपने विचारों को व्यक्त करने की एक सार्थक पहल की |

इस प्रकार हम कह सकते है कि मुक्ता जी व्यक्तित्व सहज सृजनात्मक क्षमता से सम्पन्न है |उनके सृजनात्मक व्यक्तित्व का स्पर्श उनकी रचनाओं मे हमें देखने को मिलता है |उनका व्यक्तित्व बहुरंगी और पूर्णतः संश्लिष्ट और संयोजित है | मुक्ता जी एक जागरूक और सक्रिय साहित्यकारा है जो पूरी तरीके से तटस्थता के साथ ,आंदोलनों और दायरों से मुक्त होकर अपनी रचनाएँ करती है | उनकी रचनाएँ जीवन के रुग्ण पहलुओं को ही इंगित नहीं करती है अपितु सामाजिक परिपेक्ष में उनका उन्मूलन और निदान करने का प्रयास करती है | मुक्ता जी ने हमेशा नारी सशक्तिकरण का पक्ष लिया है क्योंकि आज भी नारी काही न कहीं दोहरा जीवन जीने को विवश है |आज भी अगर कोई महिला अपनी स्वतन्त्रता को सर्वोपरि मानती है,पुरुष वर्ग के विरुद्ध जाती है तो समाज उसे हीन दृष्टि से देखता है |बचपन से ही उसके अंदर ऐसे संस्कार डाल दिए जाते है कि जिसके विरुद्ध जाना उसके लिए असंभव तो नही किन्तु दुष्कर अवश्य होता है |

'एक पहचान का जन्म'कहानी में मुक्ता जी ने दाम्पत्य सम्बन्धों और अवधारणाओं का चित्रण किया है | शेफाली अग्निशिखा बन गयी, "जीवन स्वयं एक चुनौती है |यहाँ अपनी अस्मिता खुद साबित करनी पड़ती है |"

अंत में निश्चित रूप से यह कहा जा सकता है कि मुक्ता जी ने नारी विषयक अवधारणाओं देखा ,जीवन दृष्टि से परिचित हुई ,नारी जीवन की विविध समस्याओं को अपनी कहानियों में उकेरती है |उनकी कहानियाँ अलग –

अलग पृष्ठभूमि से जुड़ी होने पर भी उनका मूल स्वर स्त्री द्वंद्व और संघर्ष का ही है| मुक्ता के सृजन संसार पर डा धनंजय सिंह द्वारा संपादित पुस्तक में तीन पीढ़ियों के रचनाकारों ने अपने अपने विचारो को इस पुस्तक में लिखा है। जिसमे डॉ शिव कुमार मिश्र ,डॉ शुकदेव सिंह , डॉ हरदयाल, डॉ माहेश्वर, डॉ संगीता श्रीवास्तव , डॉ अभय शंकर द्विवेदी ,पंकज सिंह ,त्रिनेत्र जोशी,कमल कुमार,प्रकाश मनु, प्रो ओमप्रकाश सिंह,बिजेंद्र नारायण सिंह,विजय राय,प्रदीप तिवारी,राहुल शर्मा आदि ने मूल्यांकन कर इस पुस्तक में समीक्षा कर इस पुस्तक को एक विशिष्ट स्थान में ले जाकर खड़ा कर दिया है,जिसकी हिंदी साहित्य में अपनीअलग ही पहचान है।

****